जब बेहद का बाप आते हैं, वो आकर रूहों के साथ रिहान करते हैं। बच्चों को समझाते हैं कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। अभी आत्माओं को बाप समझाते हैं। वो है परम आत्मा माना परमात्मा। उनका नाम भी आत्मा है; परंतु जन्म–मरण रहित है। इसलिए परम अर्थात सुप्रीम, ऊँच ते ऊँच गाया हुआ है। बाप को 5–7 बच्चे होंगे तो बाप को सर्वव्यापी थोड़े ही कहेंगे। ऐसे पत्थरबुद्धि मनुष्य हो पड़े हैं जो इतना भी समझते नहीं है। ओ गॉड फादर भी कहते हैं, फिर सर्वव्यापी कहना कितना मूर्खता है। भारत तो स्वर्ग का मालिक था। विश्व का मालिक था। और कोई धर्म नहीं था। इन देवताओं का ही राज्य था। थोड़े मनुष्य रहते थे। फिर वृद्धि होती है। तो आत्माएँ कहाँ से आती है? आत्माएँ रहती है शांतिधाम में। आत्मा का स्वधर्म है ही शांति। फिर ऑरगंस से पार्ट बजाना पड़ता है। आत्मा कहती है ओम शांति। अर्थात् अहम् आत्मा शांत स्वरूप हूँ। मनुष्य ओमशांति का भी अर्थ नहीं समझते हैं। आत्मा कहती है मैं शांत स्वरूप हूँ। यहाँ पार्ट बजाने आई हूँ। शांति का हार गले में पड़ा है, ढूँढ़ते हैं बाहर। मन–बुद्धि तो आत्मा के ऑरगंस हैं। आत्मा कैसे कह सकती मैं अशांत हूँ; परन्तु ज्ञान ना होने के कारण कह देती शांति चाहिए। यहाँ अशांत है; क्योंकि रावण राज्य है। स्वर्ग में एक भी मनुष्य अशांत नहीं होता। वहाँ सुख–शांति–सम्पत्ति सब है। यहाँ तीनों ही नहीं है। अब बाप कहते हैं देही–अभिमानी बनो। खूब पुरुषार्थ करो। मैं बेहद के बाप का बच्चा हूँ। बाप को याद करने से पापों की खाद निकल जावेगी। आत्मा सतोप्रधान बन जावेगी। आत्मा जानती है हम कैसे 84 का चक्र लगाती हूँ। अब फिर शांतिधाम जाकर फिर सुखधाम में जावेगी। आत्मा अविनाशी है। बच्चों को अब स्मृति मिली है, हम रहने वाली शांतिधाम की हूँ। यहाँ आए हैं पार्ट बजाने। तुम हो अहिंसक, अन नोन वॉरीयर्स। पहला नम्बर हिंसा है काम–कटारी चलाना। देवताएँ निर्विकारी हैं ना। वहाँ काम–कटारी नहीं चलाते। अभी तुम अहिंसा परमो देवी–देवता धर्म वाले बनते हो। वहाँ लड़ाई आदि कुछ भी नहीं होता है। रावण ही नहीं फिर विकार कहाँ से आवे। बाप समझाते हैं तुम आधा कल्प हार खाते हो रावण से। फिर मैं आकर जीत पहनाता हूँ। यह पढ़ाई है ना। इस पढ़ाई में ही लग जाना चाहिए। सभी आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं, तो बाकी और क्या चाहिए! ऊँच ते ऊँच भगवान ज्ञान का सागर पढ़ा रहे हैं ऊँच पद देने लिए। मनुष्य मनुष्य की सद्गति कर नहीं सकते हैं। यह सब गुरु लोग हैं भक्तिमार्ग के। रूहानी बाप सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान अथवा रूहानी ज्ञान दे रहे हैं। बाप नॉलेजफुल, तुम भी नॉलेजफुल बनते हो। नॉलेज इज़ सोर्स ऑफ इनकम। 21 जन्मों लिए स्वर्ग का मालिक बन जावें। यह है पुरानी दुनिया। इससे सन्यास करना है। वो सन्यासी घरबार छोड़ते हैं। तुम इस पुरानी सारी दुनिया का सन्यास करते हो। जानते हो विनाश सामने खड़ा है। सर्वशास्त्रमई शिरोमणि है गीता। भगवान की गाई हुई है। बाकी है सब भक्ति। जो खुद ही साधना करते हैं वो पूज्य कैसे बना सकेंगे? इस समय यह है पतित दुनिया। एक भी पावन नहीं है। बड़े–2 ऋषि–मुनि सब गंगा में पाप धोने जाते हैं। उनको पतित–पावनी समझते हैं। पावन तो होते नहीं हैं। इतना भी समझते नहीं पतित–पावन तो परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। पानी से कैसे पावन बन सकते हैं? बाप पावन बनाते हैं। पतित बनाने वाले हैं भक्तिमार्ग के गुरु। तुम ब्राह्मण बच्चे भक्ति नहीं करते हो। भक्ति है दुर्गति, ज्ञान है सद्गति। बाप कहते हैं मुझ बाप को और वर्से को याद करो। अल्फ और बे। बाप कहते हैं देह सहित देह के सब संबंधों को भूल माम् एकम् याद करो। गाया भी जाता है परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले परमपिता परमात्मा की। अब वो मिल गया तो बाकी क्या चाहिए! यह है अमूल्य जीवन। तुमको नॉलेज भी है। नॉलेज मिली, पद पाया, फिर नॉलेज खत्म हो जावेगी। बाप कहते हैं अब मैं आया हूँ भारत को स्वर्ग बनाने। अब एक/दो को मदद करो। घरबार सम्भालते बाप को याद करो। बाबा यह सब आपका ही है। अच्छा, ट्रस्टी होकर सम्भालो। हम कहते हैं ममत्व मत रखो, बस। श्रीमत लेते रहो तो फिर श्रेष्ट बन जावेंगे। वो है रावण मत, यह है शिवबाबा की मत। रावण द्वारा हार होती है। बाप जीत पहनाते हैं। श्रीमत पर फॉलो करना चाहिए। जैसे यह (बाबा) फॉलो करते हैं। ओम।